K. Nand M.A 4th Sem's ①

2

कि मैसलो ने अन्य शोधों में इसके महत्व पर बल दिया है।

(ii) कलिंग तथा नेलर ने कार्य संतुष्टि के संदर्भ में मैसलो के सिद्धान्त की समीक्षा करते हुए कहते हैं कि मैसलो ने कार्यान्वयन आवश्यकता को महत्व को जिस रूप में प्रस्तुत किया है उस रूप में औद्योगिक संगठनों में वह सभी स्तर के कर्मियों के लिए संगत नहीं है। अर्थात् सभी स्तरों के कर्मियों में कार्यान्वयन आवश्यकता का विकसित होना आवश्यक नहीं है।

(iii) कलिंग तथा नेलर ने ही इस सिद्धान्त की आलोचना करते कहे है कि मैसलो का यह सिद्धान्त सर्वमान्य नहीं है। यह आवश्यक नहीं है कि आवश्यकताओं का विकास सभी कर्मियों में उसी क्रम में हो जिस क्रम में होने का दावा मैसलो द्वारा किया गया है।

(iv) इस सिद्धान्त की एक सामान्य दोष यह है कि, इस सिद्धान्त में व्यक्तिगत कारकों के महत्व की उपेक्षा की गई है। आवश्यकताओं की अनुक्रमता और प्रभावशीलता को निर्धारित करने में व्यक्ति की बुद्धि, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, जाति, लिंग आदि व्यक्तिगत कारकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इस सिद्धान्त के प्रतिपादन में नजर अंदाज किया गया है।

(v) सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारकों के महत्व की ओर ध्यान नहीं दिया जाना इस सिद्धान्त के आलोचकों के अनुसार एक अन्य महत्वपूर्ण दोष माना गया है। क्योंकि अपनी विभिन्न आवश्यकताओं को निर्धारित करते हुए सामाजिक मूल्यों, विश्वासों एवं सांस्कृतिक प्रतिरूपों का भी ध्यान रखते हैं जिसका इस सिद्धान्त से कोई लेना- देना नहीं है।

प्रेरणा के अत्यन्त जटिल स्वरूप के कारण मैसलो का सिद्धान्त पूर्णतः व्याख्या करने में सफल है, यह कहना युक्ति संगत नहीं होगा।

K. Nand